षष्ठ अध्याय

"उपसंहार"

छठा अध्याय

"उपसंहार"

साहित्य और मानव जीवन का संबंध अटूट रहा है। साहित्य दो दृष्टियों से विशेष महत्व रखता है। पहला वह है कि साहित्य की हर विधा में जीवन के सत्यपर बल दिया और दुसरा देश के उपेक्षित अँचलों का वर्णन करना। परिणामत: ग्रामीण जन-जीवन का चित्रण अनुभूति के साथ साहित्य में चित्रित होने लगा। देश का असली रुप ग्रामों में दिखाई देता है। इसीलिए भारत देश को ग्रामों का देश कहा जाता है। आज साहित्य में अनुभव के साथ यथार्थ चित्रण और प्रामाणिकता की आवाज सुनाई देती है। हिंदी उपन्यास इसी यथार्थ चित्रण और प्रामाणिकता का उदाहरण है। हिंदी साहित्य में नागार्जुन का स्थान महत्वपूर्ण है। उन्होंने हिंदी साहित्य में आँचलिक उपन्यासों की शुरुआत पहली बार की है।

नागार्जुन का ध्यान ग्रामजीवन की ओर आकर्षित हुआ। शहरी जीवन से ज्यादा उन्होंने ग्रामजीवन का वर्णन अपने उपन्यासों में किया। गाँव का जीवन, गाँव की संकल्पना, ग्राम जीवन की समस्या, सरकारी विकास योजना, शोषण के विविध आयाम, ग्रामों का परिवर्तित स्वरुप आदि का यथार्थ चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया। नागार्जुन ने इसके साथ-साथ नये संबंध, नये बोध, मूल्य विघटन, जीवन संघर्ष, पारिवारिक विघटन, राजनीतिक टकराव, सांप्रदायिकता और नारी की स्थिति आदि पर भी प्रकाश डाला है। यही कारण है कि नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन में प्रगतिवादी चेतना यह विषय मैने चुना।

साहित्यकार की सर्जनात्मक उपलब्धि से तात्पर्य उसका साहित्य और समाज को देन है। नागार्जुन के उपन्यास में उनकी सर्जनात्मकता दिखाई देती है।

नागार्जुन का व्यक्तित्व और कृतित्व महान है। उन्होंने अपने प्रतिकुल परिस्थिति में अपने साहित्य का निर्माण किया। सतलखा ग्राम में जन्मे नागार्जुन का बचपन पिता के साथ महिषी गाँव में व्यतित हुआ। उनका बचपन निम्न जातियों के लोगों के साथ बिता। पढ़े-लिखे एवं दरिद्र होने के

कारण उनके पिता उन्हें कभी नहीं टोकते थे। उन्होंने अपने बचपन में जो विपत्तियाँ झेली, समाज में उच-नीच का भेदभाव देखा, गरीब किसानों की जो दूर्दशा अनुभव की इन सब बातों का चित्रण उनके साहित्य में है। जीवन की वास्तविकता, पाठशाला में शिक्षा संपन्न होनेवाले नागार्जुन वैद्यनाथ मिश्र से नागार्जुन बने और उन्होंने उपन्यास, काव्य, कहानी, यात्रा प्रसंग, संस्मरण, निबंध आदि का लेखन किया। नागार्जुन ने अपना लेखन ज्यादातर उपन्यास और काव्य पर किया है। उनके उपन्यासों में सामाजिक यथार्थवाद के चित्रण मिलते है तो काव्य के क्षेत्र में प्रगतिवादी चित्रण मिलता है।

नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में ग्रामजीवन पर बल दिया है। उन्होंने ग्रामजीवन के विविध पहलूँओंपर विस्तार से चित्रण किया है। साथ ही साथ प्रगतिवादी, चेतित ग्राम का चित्रण चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। उनके उपन्यास ग्रामजीवन की तस्वीर लगते है। जाति पंचायत से लेकर पंचायतराज तक का परिवर्तित ग्रामजीवन उनके उपन्यासों में चित्रित हुआ है। नागार्जुन अपने उपन्यास में ग्राम जीवन का चित्रण करने में सक्षम लगते है। उन्होंने अपने उपन्यासों में प्रगतिवादी चेतना का वर्णन किया है। नागार्जुन के सभी उपन्यास अनुभूति और संवेदना के आधार पर लिखे है, ऐसा लगता है।

नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन इसमें 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दु:खमोचन' आदि उपन्यासों का आधार लिया है। ग्रामों में स्थित अंधविश्वास, जातीयता, रुढि, प्रथा, देवी-देवता, संस्कार, उत्सव-पर्व, लोककथा, लोकगीत, शोषण के विविध आयाम आदि सभी बातों को ग्राम-जीवन के अंतर्गत संमीलित किया है। गाँव के लोग अज्ञानी, रुढि एवं परंपरावादी होने के बावजूद भी तिज-त्यौहार, उत्सव-पर्व, धूमधाम से मनाते है। आर्थिक स्थिति भयावह होने पर भी देवी-देवताओं के प्रति वे सजग लगते है। इसका एकमात्र कारण अंधविश्वास है। ग्रामवासी जाति, कुल, गोत्र की रक्षा करना चाहते है। इसका यथार्थ चित्रण नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में किया है।

नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामजीवन में प्रगतिवादी चेतना, इस लघु शोध प्रबंध में नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दु:खमोचन', आदि उपन्यास लिये है। नागार्जुन ने अपने अधिकांश उपन्यासो में मिथिला क्षेत्र के ग्रामीण जनजीवन को आधार बनाकर नवीन समाजवादी चेतना की अभिव्यक्ति की है। उन्होंने उपन्यासों की कथावस्तु में गरीबी, भूखमरी, दरिद्रता, उत्पीड़न, विषाद, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, जमींदारों के अत्याचार, कर्ज और श्रमिकों का शोषण आदि ग्रामीण समस्याओं को आधार बनाया है। इनका विचार था - ''शोषक और तानाशाही शाक्तियों के खिलाफ जनमत तैयार करना मेरा पहला काम हो जाता है। संघर्ष के लिए जो प्रतीक मुखरित होते है, उन्हें उभारता हूँ ताकि रग-रग में माहौल पैदा हो जाये।'' साम्यवादी होने के कारण वे वर्ग-संघर्ष पर आस्था रखते है। और सर्वहारा जनता ही उनकी आराध्य हो जाती है। वे मानते है कि - '' अस्सी प्रतिशत (जनता या किसान) हमारे इष्ट देवता है जो जीवन के आस-पास फैली हुई है। मैं भी उन्हीं के साथ जुडा हुआ हूँ, उनसे बात करता हूँ। मै ऐसे वर्ग के प्रतिनिधि नहीं चुनता जिसमें मैं नहीं हूँ।'' इससे स्पष्ट है कि, उन्होंने निम्न तथा मध्य वर्ग की जनता को केवल सामाजिक और आर्थिक संघर्षों में घुटते हुअे देखाही नहीं है। अपितु स्वयं भी उन संघर्षों को सहा है। उनके उपन्यासों में जीवन-दर्शन समाजवादी चेतना के अधिक निकट है। परस्पर समानता स्थापित होना, सब को विकास का समान अवसर प्राप्त होना, शोषण और वर्ग वैषम्य का अंत होना यही उनके उपन्यासों का मूल स्वर है। उन्होंने ऐसी क्रांति का सूत्रपात करने का प्रयत्न अपनी कृतियों में किया है। जिसका संबंध ग्रामीण जीवन से अधिक है और जिसके सफल होने से ग्रामों की रुढियाँ एवं जर्जरता मान्यताएँ समाप्त होंगी और समाजवादी ग्राम समाज की रचना होगी।

'रतिनाथ की चाची' में ग्रामीण जीवन के आधार पर एक उच्च कुलीन विधवा के माध्यम से भारतीय नारी के दुर्भाग्य की कहानी कही गयी है। इसके अतिरिक्त, धर्माडम्बर, कुलीनता का मोह, बहु पत्नी-प्रथा, शुभंकरपूर और आसपास के किसानों में पनपती हुई वर्ग-संघर्ष की भावना, जमींदारों द्वारा उनका शोषण, काँग्रेसियों का कुचक्र, कृषकों की जागरुकता का प्रतीक कमानेवाला

खायेगा - इसके चलते चाहे जो कुछ हो आदि सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं को उभारकर प्रगतिशील समाधान प्रस्तुत किया गया है।

आत्मकथात्मक शैली में लिखित मिथिला के दरभंगा जिले के ग्रामीण जीवन पर आधारित 'बलचनमा' एक ऐसा उपन्यास है जिसमें साधन विहीन, ईमानदार और परिश्रमी किसानों के जीवन की गाथा है। 'बलचनमा' के चरित्र निर्माण द्वारा लेखक ने साधनहीन एवं स्वाधिकार वंचित किसान के अंतर में जमींदारों के द्वारा किये जाने वाले शोषण और दमन के विरुद्ध विद्रोह की भावना को अभिव्यक्त किया है। यद्यपि प्रेमचंद के गोदान में होरी की भांति 'बलचनमा' संपूर्ण भारतीय कृषक के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। फिर भी होरी की भांति परिस्थिति के समक्ष समझौता नहीं करता न सबकुछ सहते सहते अपनी काया को शव की भांति ढोता फिरता है। अपितु बलचनमा में हौसला है, वर्ग संगठन की समझ है, जूझकर उत्सर्ग करने की चेतना है।

ग्रामीण तरुणों में स्वतंत्रता के पश्चात अनमेल विवाह से संबंधित ढोंग, आडंबर, जर्जर रुढियों और पतनोन्मुख मान्यताओं के विरोध में उभरनेवाली नवीन चेतना को 'नयी पौध' में विश्लेषित किया गया है। कमोवेश इसी संवेदना से संपृक्त उनका उपन्यास 'उग्रतारा' भी है। जिसमें उगनी कामेश्वर एवं उनकी भाभी नयी चेतना के प्रतीक है। कामेश्वर के द्वारा लेखक ने सामाजिक क्रांति की प्रेरणा दी है।

'बाबा बटेसरनाथ' में नागार्जुन ने दरभंगा जिले के रुपडली गाँव के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक संघर्षो, उसकी प्रथा-परंपराओं, किसानों के दैनिक जीवन की गतिविधि, देवी-देवताओं के प्रति लोगों की अंधश्रद्धा, कंपनी के शासन चंपारन के सत्याग्रह आदि का मानवरुपधारी वटवृक्ष से आँखो देखा वर्णन किया है। वह वटवृक्ष आंचल विशेष से पूर्व इतिहास और उसीके संदर्भ में भारतीय इतिहास को बतानेवालाही न हीं लेखक के राजनीतिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। बाबा बटेसरनाथ को जमींदारों और साम्राज्यवादी शक्तियों से नफरत है। वह मजदूरों के समर्थक है तथा बहुत आशावादी है, तरुणों के प्रति उन्हें पूरी आस्था है। उपन्यास में उठायी गयी सभी समस्याओं का

समाधान साम्यवाद में ही देखा गया है। उपन्यास का अंत भी साम्यवादी नारे से ही होता है - ''स्वाधिनता, शांति, प्रगति।''

नागार्जुन के 'दु:खमोचन' उपन्यास में दु:खमोचन दु:खों से मुक्ति दिलानेवाले पुरुष है। जनसेवा से कटिबद्ध इस पुरुष में कोई भेदभाव नहीं। इसी माध्यम से ग्राम-सुधार और ग्राम-विकास का चित्रण नागार्जुन ने अपने उपन्यास में किया है। पोखरों की मरम्मत, कुओं की खुदाई ऐसे ठोस विकासात्मक कार्य दु:खमोचन गाँव में करता है। उसकी प्रगतिशील महत्वकांक्षी विचारधाराएँ मुसीबतों के मारे गरीबों के गांव को नवचेतना का स्वर प्रदान करती है। इसी तरह नागार्जुन ने इस उपन्यास में प्रगतिशील विचारधारा का एवं नव चेतना का यथार्थ चित्रण किया है।

'वरुण के बेटे' नागार्जुन का मछुओं के जीवन से संबंधित प्रथम हिंदी उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखक ने समाजवादी यथार्थवाद के माध्यम से निम्नवर्गिय जनता के संघर्ष को उभारा है। देश की श्रमिक शक्तियों को संगठित होकर शोषकों के विरुद्ध न्याय और अधिकार की लडाई लडना ही इस उपन्यास का संदेश है। इसमें कथाकार यह भी संकेत देता है कि, ग्रामीण जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अवमूल्यन रोकने के लिए सामूहिक संघर्ष ही एकमेव कारगर तरीका है। कुल मिलाकर ग्रामीण यथार्थ को उसके सारे तेवरों के साथ नागार्जुन ग्रहण करते है। और इस क्रम में ग्रामीण जीवन की विसंगतियों को उभारते हुए उनके बीच से नयी चेतना को फूटते हुअे दिखाई देते है।

'रतिनाथ की चाची' से लेकर 'कुम्भीपाक' तक नागार्जुन के अनेक उपन्यासों में कथ्य तथा समस्याएँ समान नहीं है किंतु उनकी जनपक्षधरता सबको एक सूत्र में बांधती है।

आलोच्य उपन्यासों के अध्ययन के उपरांत हम यह कह सकते है कि इन उपन्यासों का केंद्र ग्रामजीवन है। ग्रामजीवन पर ध्यान केंद्रित करके ग्रामजीवन का सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर चित्रांकित किया है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में ग्रामजीवन के साथ ग्रामजीवन में प्रगतिवादी चेतना का वर्णन करना ही मुख्य उद्देश्य है। और ग्रामजीवन का समग्र जीवन और ग्रामजीवन में प्रगतिवादी चेतना यथार्थ शब्दों में स्पष्ट करने में नागार्जुन सफल रहे है, ऐसा लगता है। अज्ञान के कारण नई-नई

समस्याएँ पैदा हो रही है। राजनीतिक व्यक्ति और धार्मिक व्यक्ति इसे बढावा दे रहे है। राजनीतिक व्यक्ति सत्ता के बलपर, जमींदार धन के बलपर और धार्मिक व्यक्ति धर्म के आधारपर ग्रामवासियों का शोषण कर रहे है। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में इन समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत किये है। जमींदारी प्रथा का विरोध, अनमेल ब्याह का विरोध, धर्म तथा रुढि परंपरा का विरोध, अंधविश्वास पर प्रहार, राजनीति पर करारा व्यंग्य किया है। इसीतरह साम्यवादी विचारधारा का चित्रण यथार्थ रुप में किया है।

आज धीरे-धीरे शिक्षा व्यवस्था, राजनीतिक सुधार, संविधान की सहायता, अधिकारों की प्राप्ति, सरकारी विकास योजना आदि के कारण शोषण की मात्रा कम होकर नये विचार, नई चेतना प्रवाहित हो रही है। किसान संगठित बनकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सक्रिय बने है, तो दुसरी ओर सहकारी संस्था और बैंक की सहायता से कर्ज सुविधा उपलब्ध होने के कारण ग्रामवासी जमींदारों द्‌वारा होनेवाले शोषण से मुक्ति की आशा कर रहे है। जिसके दर्शन यहाँ होते है।

नागार्जुन ने प्रगतिवादी विचारधारा और ग्रामजीवन में पनपनेवाली नई चेतना को यथार्थ रुप में रेखांकित किया है। अन्याय, अत्याचार, शोषण, कुप्रथा आदि के खिलाफ संघर्ष करनेवाले क्रांतिकारी पात्र यहाँ दिखाई देते है। जो नागार्जुन के विचारों के वाहक लगते है। समाजसेवी संस्था तथा समाजसेवी व्यक्तियों के कार्य के परिणामस्वरुप यह प्रगतिवादी विचारधारा बल पकडती जा रही है। नागार्जुन ने परिवर्तित ग्राम-जीवनपर प्रकाश डाला है। 'बलचनमा' का बलचनमा किसान मजदूरों का संगठन बनाकर किसान सभा की स्थापना करके जमींदारों के खिलाफ संघर्ष करता है। 'रतिनाथ की चाची' का ताराचरण जातीय भेदाभेद मिटाता है, और एकता की स्थापना करता है। एकता के बल पर गाँव का विकास करनेवाला वह आदर्श पात्र यहाँ लक्षित होता है। 'नई पौध' में अनमेल ब्याह को रोकने का काम युवा पीढी करती है। इस उपन्यास में नवजवानों का यह काम नई चेतना का प्रतीक है। 'बाबा बटेसरनाथ' में चित्रित असहयोग आंदोलन भी इसी का उदाहरण है। जैकिसुन ग्रामचेतना को पुनर्जिवित करनेवाला एक पात्र लगता है। 'दु:खमोचन' का दु:खमोचन सब का दु:ख दूर करनेवाला पात्र है, वह

गाँव का सुधार तथा ग्राम विकास करनेवाला नागार्जुन के विचारों का वाहक पात्र है। उसके विचार प्रगतिशील और नई चेतना के वाहक लगते है।

नई विचारधारा, क्रांति, शिक्षा प्रसार आदि के कारण ग्रामजीवन में धीरे-धीरे जागृति हो रही है। अपनी अस्मिता, अपने अधिकार की रक्षा ग्रामवासि कर रहे है। ग्रामवासियों के विकास में सरकार के साथ-साथ समाजसेवी संस्था, सेवाभावी व्यक्ति और ग्रामवासियों का सहयोग अनिवार्य और आवश्यक है। गाँवों के विकास में ही राष्ट्र का विकास है। ग्रामीण जीवन में सुधार, प्रगति, नई चेतना क्रांति के आधार पर गाँव का धीरे-धीरे विकास होगा।

ग्रामीण जीवन में नई चेतना, गाँव का सुधार, शिक्षा, क्रांति आदि सब प्रगतिवादी विचारधाराएँ नागार्जुन के उपन्यासों में मिलती है। नागार्जुन के यह प्रगतिवादी उपन्यास हमें बार-बार इस तथ्य की ओर मुखरित करते है कि गाँवों की आर्थिक, सामाजिक बुनियाद को बदले बिना उनका उपरी ढाँचा नहीं बदला जा सकता और इसमें जो भी परिवर्तन उपरी तौर पर किये जायेंगे वे उन तमाम विकृतियों को ही जन्म देंगे जो कि मात्र आज सतह पर दिखाई दे रही है। नागार्जुन ने यथार्थ को मानव मुक्ति की सही सोच से जुडते हुअे अपनी रचनाओं में कलात्मक अभिव्यक्ति दी है। ग्रामीण जीवन की बुनियादी समस्याओं को रेखांकित करते हुअे उन्होंने आजाद हिंदुस्थान की अपनी परिकल्पना के स्तर पर उन ताकदों से संघर्ष किया है जो उनकी इस परिकल्पना की पूर्ति में बाधक थी। नि:संदेह नागार्जुन ऐसे साहित्यकार है, जिन्होंने साहित्य को मुक्कमल जिदंगी से संदर्भ में ही देखा और ग्रहण किया।

नागार्जुन ने ग्रामजीवन के चित्रण में ग्रामीण समाज व्यवस्था, ग्रामरचना, ग्राम स्थिति, ग्रामजीवन, आर्थिक-साम्पत्तिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, ग्राम जीवन की समस्या, जमींदारों की मनमानी, नारी की स्थिति, नयी व्यवस्था, सरकारी विकास योजना, परिवर्तित ग्राम जीवन, नई युवा पीढी आदि पर भी प्रकाश डाला है। उनका साहित्य मानवहित समाजकल्याण ग्राम पुर्न निर्माण का प्रमाण है। उनका साहित्य पढने से पुरा भारतीय ग्रामजीवन सामने स्पष्ट होता है, ऐसा लगता है। ग्राम जीवन के चितेरा नागार्जुन है, ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा।

नागार्जुन के साहित्य को समाज, धर्म, एवं राजनीतिक विचारों से अलग-अलग रखकर नहीं देखा जा सकता। वे सभी विचार एक दुसरे के साथ मिले हुए हैं एवं एक ही व्यापक भूमि पर स्थित है। इन सभी माध्यमों द्वारा नागार्जुन ने केवल मानव की भलाई को ही प्रस्तुत किया है। बुराइयाँ नष्ट करने के लिए उन्होंने केवल खंडन ही नहीं किया, वरन सुझाव भी दिये हैं। वे संघर्ष प्रिय है, किंतु उनका संघर्ष जीवन विध्वंसात्मक पक्ष पर बल न देकर उसके रचनात्मक पक्ष पर बल देता है। उनका ध्येय अतीत के आलोक में वर्तमान का मार्गदर्शन है। वे एक अत्यंत जागरुक, चिंतक, समाजसुधारक, एवं मनिषी साहित्यकार है।

नागार्जुन के उपन्यासों का अध्ययन करने से वह एक ऐसे चिंतक के रुप में हमारे सामने आते है, जो अपनी मौलिकता, व्याप्ति और अन्विति के कारण विशिष्ट महत्त्व का अधिकारी हैं। प्रगतिवादी, क्रांति, सामाजिक समता, आर्थिक समानता, यही उनके साहित्य का प्राण रहा है। इन्हीं बातों का यथार्थ चित्रण करते हुए भारतीय ग्रामजीवन को तलाशने का कार्य किया है।

नागार्जुन की रचनाएँ भारतीय ग्रामजीवन की एक 'मिसाल' बने है। जो भोगा है, देखा है - उसका ही चित्रण किया है। उनके पात्र मार्क्सवाद से प्रभावित नागार्जुन के विचारों के प्रतिपादक प्रचारक है। वही साहित्यकार श्रेष्ठ माना जाता है जिनकी रचनाए ग्रामजीवन की वास्तविकता को दर्शाती है। कई सालों तक समाजमान्य है - इस दृष्टि से नागार्जुन महान साहित्यकार है, ऐसा मुझे लगता है।

---×××---